लोवुत्तिणा हरषनुइ॥ यत॥ उ छोणा अहेणा रवनु। सारह णिरिसोपास्य मिपुहवश। महा मद्धोडुरिद्धकावियाफलि ऊमद्धेयसोरठा। शातहन इजिम अन्मइमाहणा निना तइहरषघाइ। तिमसंघारउ सुविहित नइ॥ विरुत्ति०स वंरन्नमाहि वैडोर्यरन्नप्रधन विषशगादिना प्रहारघा रा। गोसी० संघलाइगंधम हेगोसासवंरनप्रधनजे णा। तहघका कोठाद रोगहालइ। शारीरनइ लकोतिकरइ॥ नहव० जम०॥ रय० इंहनात्तक केतनादिरन्नमाहिवहै रन्नहारा प्रधन॥

नूइग० जोगीनइविन्नतीराषनुंवोपडबुहरषनुंकारणकुइ॥ अथवासा घूनइघषप्रमोचनुंकरवुतसंतोषनुंकारणकुइ॥ तिमसुविहितनइ संघारउ हरषनुंकारणकुइ॥ तथापिचुतासंपदापरवीत्तइमोक्षान तघकाअलगाकाक्षपरान्नव्यापारत्यानिराकरणा॥ तहनुगहणा० पामवुंजमहरषनुंकारणकुइ॥ तहउपरिदृष्टांतइकहइछइ॥ जिमपि ज्ञाइपुत्रनइजणविणाआप्पइबाहिरुंकाढोअनइराजादिकनइबलि ज्ञागपामइतहनइहरषनुंकारणघाइ॥ तथादेवलोकमाहिवता कयाणा अवमाणायंवअवज्ञाणा मद्धाणंचपडागा तहसंघारोसुविहियाणा त्रुरुत्तियघमणाणा गोसीसंच दणंचगधमाणा नहवरयणासुवयरं तहसंघारोसुवि हियाणा॥ पुरिसवरपुंडरीउ अरहाइवसद्धपुरिससी यदाहा॥ अहंवाकायमत्तासवि सुमहद्धस्साविकाणिणा मुझं वय रस्सउ अपस्सवि मुझइहोहासयसहस्सं॥ तिमसंघारउ सुविहित नइप्रधननाणिणवउ॥४॥ पुरस० समस्तपुरषमाहि॥ वर० प्रधन॥ पुंडरी० पुंडराकंकमलसमानिहइ॥ जिमपुंडराकंकमलकादमइउप नुजलइवृद्धिपमउं॥ अनइकादमनइजलनइपरहरानइउपरिवर्त्तइ तिमइहो॥ अरतीर्थंकरकादमइउपनाजोगिवृद्धिपाम्याकामभोगइ

बाहिरोकाढोकुइत सेवाइ इंद्रादिकनाठामपामइतह नइहरषघाइ॥ इमराजघीका ठोराजपामइघमंत्रिपइवा सेठिपइवी अणीपइवीघा चुकाआपणापइवीपाऊपा मइहरषघाइतिमसुविहित नइसंघारउ॥ अवमा० अपमा नवुपामवु॥ अवज्ञा० पाणीन घातहनइपुन्यवेतनइकोइ एकद्वेषाइआलदाधूकुइते आत्मपट्टयइतहपुन्यवत नइसुषनुंकारणघाइ॥ ज्ञाता सुन्नइनापरितिमसुविहित साधूनइसंघारउ दुरवछइप णासुषनुं २ कारणघा इ॥ मद्धाणा० मज्झनेठितहि नापता काहरणपता काल

तिमधर्मीमाहिअहंसाप्रधा नतिमसर्वपव्वरवाणमाहि संघारउप्रधन॥ जणव० जिनपदलोकनावचनमा हिसाधूनउवचनप्रधन जेहनइणीघेनिरवद्यसत्य परनइहितुंवचनइहो॥ ४२॥ चाषानउविवारछइ तन्नाणवउ॥ जिणय० ती र्थंकरनुंवचनासूइ० सिद्धा तविदातमाहिजिनवचन प्रधनना जेजणीबीजाना वचनविघटवालहइ। पणि तीर्थंकरनुंवचनविघटइन हो॥ सुद्धि०सर्वद्रव्यसुद्धि माहिझाइकसमकितप्र धनासुद्धिजेजणीवलोसि घ्या चमलनावइपडोबा

लीपाइछिपाइनहो॥ किंबहुतपरहरानइत्रिभुवनउपरिवर्त्तइ॥ अ थवाजिमपुंडराककमलसीतलपणामाहिलोकनउतापनिवारवा समर्थेविमअरिहंतकर्मरुपतापनिवारवासमर्थअथवापुंडराक कमलकोणिइपशुपराज्ञवानसकइतिमअरिहंतनइकोइपाषंडी पराज्ञवानसकइ॥ जिमअरिहंतउत्तमतिमसंघारउत्तम॥ मुहिला०समस्तस्त्रीमाहिजगवतीपूज्याइंद्रादिकनइ॥ जिण०तीर्थंकर नामकर्मानउगसंसारमाहिव्यख्यातकार्त्तिर॥ वसा०वंसमाहितीर्थं हाणं महित्तागुणजगवइउ जिणजणणीतंजयंमिजहा वंसाणंजिनवंसो सव्वकुलाणंचसावयकुलाइं सि द्धिगइवगइणं मुत्तिसुहंसव्वसुखाणं धम्माणंचअ हिंसा जाणचयवयाणंसाहुवयणं इजिणवयणंव सूइणंसुद्धीणंदंसणवजहा कद्दमाणंवअनुदउद वाणंविडुलहंतिकुयणंमिबत्तीसंदेवेसनतेकायंतिएगमणा ०नइअजावइए महासुहि॥ ७॥ कल्ला० आरोग्यपणउतमोक्षक ल्लाणमाहि॥ अप्प० राजाजिहांकइहलोकसुखनउकारणतिमस घारउमोक्षउहवनोकारणस्वर्गअपवर्गनासुखमाहि॥ दिवात्रि चनमाहिदेवतानइसंघारानउपामवउंचलनइछइवृत्तिनइ अजावइ॥ बत्ती० बत्तीसइंद्र२० नवनपति१वेइ मा१सूर्य१०

करनउविसप्रधननासव्व कुल्सर्वमाहिश्रावकनउ कुलप्रधनातघाकुछिवं तअन्यकुहिकुलोमाहि श्रावकनउकुलप्रधनना समकृतमूलधर्म्मनाप्रध नयणीमाहि॥ सिद्धि० सर्वग तिमाहिसिद्धिगतिप्रधनना अंवागमणानइअजावइ॥ मुगति०सर्वसुखमाहिमुग तिनउसुखप्रधनछइ॥ तेसा माहिआरिछइपणअतन घातसुखनाछ॥ धम्म०स वेधर्ममाहिअहिंसाश्रीजा वरयाप्रधननायतेमएगेंविय इंदियनिदिठंनिणवरिहिं सव्वहिंयाणइवायवेरमणं अवासासातसरखछा॥ १॥

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

णाइ मुगति पाम्राइ॥ परमु०
सर्वपुरुषमाहितार्थंकरमो
दा॥ परम्रग० सघलागति
माहिसिद्धिगतिपदधन्नमो
टा॥ आवागमणनाअन्ना
वद्यो॥ १२॥ तिसनइपासकु थि
इतसाटि॥ नियमा० सघलो
नियमव्रतमाहिब्रह्मचर्य
पदधनाउ रूचा॥ मूल०
आनादिकालजावनइसं
सरमाहिपन्नमणकरतां
दोहिलउंतपाम्यउंतउ य
चंद्रापणुदोहिलउंतप
म्युंतउमनुष्यपणुंपामव
उंदोहिलउंतपाम्यउंतउ
आर्यक्षेत्रपणुदोहलउ

वैमनिकएवंबत्रीसइंद्रसामान्यपणाप्राप्तिर्यंतरनकस्यं॥
जंते०एइंद्रादिकएकाग्रपणाइधसइभावनाभावइजेसंघारानी
दा॥ लेहइ०पाम्यउ॥ उ०अवधारणे॥ तए०अहोक्षेपकतिइत्ती
धउ॥ पय०एपतहं॥ पंडि०पंडितमरणउत्तमार्थप्राप्तिरूप॥
जिण०जिनतार्थंकरइत्राष्यउलाधउकसुकरानइ॥ दुउ
०रणीनइजापानइ॥ कहिनइकम्म०कर्मरुपारिपुमाझमुन्न
टमुरानेइजापानइ॥ सिद्धि०सिद्धिमुक्तरूपसुखआराधवा
वाणंविदुलहंतिकुयणंमि बत्रीसदेवंदा जंतकायंति
एगमणा कहाणंनवलेसा॥ नोइसइंदातस्वअ
नूदयं कपिंदाअनूपिंदातस्वईहंतितंसयय
तएवंउमत्तधं पडियमरणंउजिणवरखायं हेउणा
कम्ममले सिद्धिपडागाउमलहइ आणाएंप
रमसुक्खं नाणाएंकेवलंनहासाणं॥ परनिव्वाणंच
जहाकप्पाणनणियंजिणवरिंदे॥ सवुत्तमला
त्रासासाम्रन्नेवबलात्रमन्नंतिपरमुत्तमंतिबुय
रो॥ परम्रग०इपरमंसिद्धिंति॥ १२॥ मूलंतहसंजमो वा
तपाम्राउतउउत्तमकुलहोहलिउउत्तमकुलपाम्राउतउसु

रूपपत्तोकाउनूलाधीमामा
१०त्रणा०सघलाध्यानमा
हिपरमसुकलध्यानप्रधनो
त्तेहथीकेवलज्ञानपामीइतो
हेत्रणाबधत्रात्मा॥ ए०ज्ञा
नमाहिकेवलज्ञानमोट
उत्तेआव्यउजाइनहा॥ परि
नि०केवलीनइथोतइत्यप्र
कृतिछिसन्नादिछइतनृत्य
करीनइजावस्वासतउमोक्ष
सुरकुपामइ॥ कम्म०अनु
क्रमइएत्रणि०त्राष्यउ॥ जि
णा०जिनवरतार्थंकरइपंडि
तमरणनउसरुयबोलउ॥१
सवु०सघलाइउत्तमलोत्त
सम्यक्देराधृतिमाहि॥ स
माचारित्रलाभमोटउत्तं

३

कष्टकर्म्मधकावेगला
घयाछइ॥ सवु०सघला
इउत्तमप्रधानसम्यक्त
दिलाभमाहि॥ सा०स
मन्नचारित्रातरुपजेला
त्रातसघलालाभमाहि
मोटउलाभतिमसंघारउ
मोट॥ १३॥ तेसा०सघली
तेसामाहिसुकलनेरा
प्रधनकेवलीनइपणा
हुइ॥ तमाटि॥ नियमा०
सघलानिमव्रतमाहिब्रह्म
चर्यप्रधना॥ उक्तंच०त्राकय
व्रतघोरा शूरेश्वनउकात

THE ASIATIC SOCIETY OF BOMBAY

रोकारियर्यागमुघस्याका
रत्निनउरासत्रैः किंचा॥
देवदाणवगंधव्वा॥ जक्खरक्ख
स्सकिनया बंभयारिनमं
सिता॥ इक्करंजेकरिंतिय
२॥ युत्रा०यतात्रा७ गुप्त
माहिसुमति॥ गुप्तघध्य
नानेत्रणासप्रतिगुर्यतेइ
तिसागुणकुश॥ मूलंत०
मोक्षनउकारणसंजमा
जेत्रणा॥ संयमविनोमो
क्षनहइ॥ पनःज्ञाखरो
वेदणात्रारचाहा॥ नारस्स
त्रागानकुवेदणस्सा एयं
खुनाणंवंदेणाणाणा
माणस्सत्रागानकुसुग्गई
गए

देवा० देवतापणा देवलो
क मा हि रह्या ॥ चुज० च्यो
ग व इ ॥ बहु० ज्यां न घ का
र इ न वधे र णा छ ए तरवि
क्रा रूप सुख भोग वतां ॥
संघा र ॥ जे सम्य क्त्व दृष्टा
दिवता छइते साधु आदि न
इ संघा र इ दश तेथा पूर्व
भव ना आ पणा संघारा
ना आराधना संसारा न इ
संघारा ना गुण संसार तो
श ॥ आसन० आसन सय
न मूका न इ स्वर्ग लोक मू
का न इ ॥ भल इ कुल इ अ
वतर इ ते संघारा नो कर
ण हार ते हु न इ न मस्कारो

ति कु० त्रि भुवन स्वर्ग मृत्य पपाताल वासी जे हु न इ न म इ त्ति त्रि भुवन
राज सिद्ध संय इ हा रु पात कि सइ करा णा मा इ ॥ स मा हि० इ त्ता प्रकार
वि ज्ञस मा हु तणा इ पा मा इ ॥ पत्ती० अ हो रूप क तु पा म्य छ इ ॥ सम्य
य० सिद्धांत ना विचार णा इ करी ॥ हव इ संघारा न इ उपमा क हु इ छ इ ॥
रह्या० नि मक्त्वा राज पदवी या मा न इ अति संतोष पा म इ । संसार
मा हि इ हलोक ना सुख पदा सुख पा म इ भोग वते विचरइ ॥ ति म
ति कु य णा रह्य स मा हि पात्ता सिद्धा त हि सम्य क्त्व पामी रह्या
नि सय न ग ले वि ज्ञ न फल ले ले इ वि हरंति ॥ अजि नंद इ मे
रिय ये चुज्ज मुख स्म सा कु णा वाज न ले द्वी संघारो सु पुरि सय
र म इ ह्या वि रो दे वा वि दे व लोए चुंजंता बहू वि हाइ भोग
इं संघार चिंतंता आसण सय णा इं मुंचंति चादा वुपिछणा
द्वी सूरो इ वा तय सा विरिप्पंतो धण वंतो गुण वंतो हि म वंतो महंत वि
क्का इ कर इ ॥ ८ ॥ वंदे व० ज न संघारा नु करणा हार क ना परि
इ छो न इ ॥ नि म वंदू मा शी म्य गुण इ सो न इ नि म संघारो न्त्र करण
हार सो म्य गुण इ सो न इ ॥ सूरो० नि म सूर्य त न इ सो जी इ ति म
संघारा न्त्र करणा स्मरत प्रत न इ करी सो न इ ॥ धणा व० धन वं
त न इ नि म मंडु आ श्री दृ हि इ ति म संघारा न इ सर्व पूज्य इ मा
न इ ॥ गुण० कृता दि गुण वंते पूज्य ति म संघारा न इ पूज्या ॥ ह म० म हा ह म वं मो ट इ ति म संघारा इ
मोटा इ जाणि वा ॥

वारित्र लि खक म हो ह व पा
म्य इ ह रष धा इ ॥ अनु क्रम इ
संघारा इ आराधी मो क्ष ना सु
ख पा म इ ॥ ९ ॥ अजि नं० अ
नंद पा म इ छ इ ॥ मे हि० मा हू र
इ हा इ कि मा त्रणा ॥ उच्च०
ह न ग वंत सु मुं न इ ॥ सा
धु० मो क्ष साधवो न इ इ पा य
क तु ॥ जल० ते त्रणी संघारा
इ ला दो पा मो ॥ संघा सु ई इ
ते संघारा इ ॥ अथवा जीव ना
दया नि मत्त इ उ पा दि क पाद
रा इ ते संघारा इ ॥ सु पु० सत्पु
रुष न इ न्याना दि क न इ वि
स्मारवा ते हेतु न संघा कृत्य
प मोटे कारणे कहे इ ॥ ७

त्रण० कहे त्र ग वन अहे
सां न ल वा वांछ इ छे ॥
के र० कहेवा गुणा वंते हो
प कहु ना न इ संघारा इ क
रव ॥ संघा० संघारा इ ॥
के रि० संघारा इ के स वइ
क्षेत्र इ के हु व स्काल इ क
रव ॥ मा न न गरा दि कथा
गंध व साला ना टिक सा
ला वरजा कर व ते कहे
इ छ इ ॥ उर के० अवछा
त न बि हु प्रकार इ एक इ
व्य बी ज न इ ना व इ व्य इ हे
त्र फल कादि ते हु न इ जो नि
काया स माधि न रहे इ ॥ का
या स माधि न हे मन स माधि
हि रहे इ ॥ जा व वहे त न ते
त्र न इ परि निश्चा म ला हार
स्थि वर ते सिद्धांत ना जाव

गुत्ता० मंत्र गुप्त्यादि इ गुप्ति ॥ स म० इर्यादि पंच वि ध ए पेत सहित ॥
संज्ञा० आ श्रव न इ रु ह व इ त्याग त्रे इ स्य म न त व त प र त्रे इ ॥ नि य
म० अनि ग्रह स्वि सेव ॥ जोग० म नादि त्र ला योग युक्त ॥ स म णो० भाव
स पर हे इ श्र म इ त्र म त्त तपसी ॥ स म० स माहि प्र स मूर्वित ॥
इस० स म क ॥ ना ण० ज्ञान मत्यादिक ते हु न इ वि ष इ म न छ इ ॥ अत्र
मूत्र हा ॥ एहवा गुण इ करी सहित ना त संघारा इ कहीइ ॥ इ० वली संघारा
गुत्ता स म इ ति व संजम तव नियम जोग जुत्त म णो स म णो स माहि
यमणो दंस ण नाणे अण न्न मणो तरु व्व पव्वया णं सये चुर
म णुघा व व इ दहा णं चंद व्व तारा णं तह संघारो मुविहि या णं
न णा कोरि स्स जाणइ संघारा किरि सा अ अ गास गरवलित
स्स करणं एयंताइ छि मो नाइ हा येतिज स्स जोगा नरा य वि
वि हाय दुति आयं का अरुहइ य संघारं सुवि सुद्धा त स्स संघारा
जेणा वइ वरा ग्ग वृद्धि या म इ पंडित मरणं आराधइ पन्ना व वइ त्रा ॥ एयं ता० ताव
दा दो ॥ आदि पदे लुप संघारा नु स्त्र रूपा इ छि० नाणा वा वोछ ॥ ३ ॥ हव इ शि
ष्य पूछ इ छ इ ॥ किं वा इ संघारा इ करी इ ॥ किं वा इ न करी इ ॥ हाय० मनादि जोग
त्र हना हा नि पाद्या वि शेष ना वा पा र द्वा ॥ संय म जोगे इ प्र वर्त्ता वी न सकं
इ ॥ नरा० गर छ पणा इ करी बल रूपादि हा नि पा म इ ॥ वि वि० अनेक प्र कार इ
रोग ने राहि ॥ आय० सद्य घाता ॥ मूला दि पद व इ ग्र कर्म अरु० अंतः करण
सुधि अंगी कार कर इ संघारा इ ॥ सुवि० निर्दोष नर ती वा ते हु न इ संघारा ॥

नाधणा न इ इ णा कहे इ
छ इ ॥ मे रु व प सर्व रंगा पू
र्ण मा हि जंबू द्वीप नुं मे
रु प्रधान ति म घणा सु
विहित साधु मा हि संघा
रा नु करणहार प्रधान ॥
संयम परिधि य पाम्या पछी
ल पणा इ सयं ज्ञरण समु
द्र मोटे प्रधान नावीना
समुद्र मा हि ॥ चंदो० नारा
दिक मा हि प्रकाश क
रा वे इ मा सो न इ ॥ तह०
ति म संघारा इ साधु न इ प्र
काश नु ज्ञा नादिक नुं क
रण हार ॥ ३ ॥ ज्ञा० ति
म नें ति म्या दि संघारा न
इ पास इ व्या छ इ त्त श्री
गुरु न इ पूछ इ छ इ ॥

हि॥ एमादि नेआ इरवाजो
गतेआ इरशयरहेवायोग
तपरहरश॥सुहुनिर्मलस
म्यक्त्वआ इरश॥आय०पर
मर्द्धलाजरुपचारि त्रइछ
पणइयहानश॥कारण॥पा
लेश॥सामा०श्रमणगुणाव
विसामलक्षणचारित्र॥
आरु०संघारउकरश॥सु
वि०निर्सिधातहनउसंघा
रउ॥३७॥जोरागग०जेरागग

जोगा०नेकउइठारसरसमाताउगारवइआतउमइोत्तमरसाघकउ॥नियछ
०अकायसवानइअहंकारशतघोलनाइंदियवुआलावुनवछइ॥आरु०एह
वउघकउजेत्रित्तासहितसंघारउकरइ॥अवि०अविसुधसदोषमइलताउतहवुसं
घारउसंसारमाहिरोलक्षात॥३४॥जोपु०नेउत्तमपात्रभूतसुपात्रा॥करणस
लेषणावैरागइकरीकरश॥आलो०गुरुसमीपइआलोइनइनिसल्लघाश॥
अरु०एहवउघकिउतकरस्संघारउ॥सुवि०निर्दोषतेहनउसंघारउ॥३७॥जोपु

जोगारवएणमन्नोनियछईआलोयणंगुरुसगासंआरुहइ
संघारं अविसुधातस्मसंघारो जोपुणायतेभूउकारइ
आलोयणंगुरुसगासंआरुहइसंघारंसुविसुधातस्मसंघा
रो जोपुणादंसणमइलासठिलचरित्ताकरइसामन्नंआ
रुहइसंघारं अविसुधातस्मसंघारो जोपुणादंसणसु
धोआयचरित्ताकरइसामन्नंआरुहइसंघारंसुविसुधातस्म
संघारो जोपुणागहासरहितितिगुत्तिगुत्तातिसल्लमयरहि
उआरुहइसंघारंसुविसुधातसंघारो॥ तिहिगारवेहिर
हितिदंडपडिमायजोपहियकिन्नाआरुहइसंघारंसुविसुधात
स्मसंघारो॥३८॥ दुघरहित॥तिगु०अनइत्रिहुगुप्तगुप्तउ॥तिसि०मायानि
दानमिथ्यादेवत्रिताजान्यता॥विषयपरघागवत्तु॥३९॥तिगा०त्रिलागा
रवइठारससातागारवरहिते॥तिदंड०मनादिदंडउपडि०तहनुपरिहरणा

णारु०नेवत्तीसमयकव
रहितातघासअतीचार
समक्कमइलमहिनासि
ठि०चारित्रसंठलोकरइ
सअतीचारुकरइ॥अथवा
समतिगुप्तिनेरतिमयात्ते
इ॥आरु०एहवउघकउसं
घारउकरइ॥अवि०असु
द्धलहनउसंघारो॥३६॥
जोपुण०नेवत्तीसाधुअ
वकादिकरणेसम्यक्
सुद्धनिर्मलनेसम्यक्करइ
बोलकल्पाइ॥उत्त०
हणतिलिंगस्था

चउ०चारिकषायनुमरइणहारारलणहारा॥चउविं०चारिविग
थाअकाआरुनक्कघारदसकघारसायकघा४॥वरहि०तताइ
वेर्नतघारहिता॥निव्वं०सदाइंविकघानकरइ॥सेषंपूर्ववत्॥४०॥

चउविहकसायमहणोचउविहविकहाहिंविरहिउनि
च्चं आरुहइसंघारंसुविसुधातस्मसंघारो॥४०॥पंचमइ
द्वयकलिउपंचसुमतिइसुसुहमाउत्तो आरुहइसंघारंसु
विसुधातस्मसंघारो छक्कायापडिविरउसन्नयछ
णविरहियमईउ आरुहइसंघारं सुविसुधातस्मसंघारो
अठमयठाणजठोकम्मठविहस्मरवणहेउत्ति आ
रुहइसंघारंसुविसुधातस्मसंघारो नवबन्नवेरमुतो
उत्तीदसविहसमणधाम्म आरुहइसंघारं सुविसुतस्म
संघारो॥ नुत्तस्मउत्तिमाठं मल्लियकसायस्मनिद्विया
रस्सजणाकरिसउकुत्तान्तो संघारगयस्मसमणस्स
सुत्तस्मउत्तिमाठं मल्लियकसायस्स निद्विया रस्सजणाक
रिसंचसोरवं संघारगयस्मरवगस्स॥४६॥निर्वि०दावज्जवादि
विषयविकारहितनइ॥जाणि०पूज्यजगवंतनइकहउ॥किरि०केहवउ
लाजसंघार०एहवउगुणाकरीसहितश्रमणनइसंघारउरहस्याहेता

पंचम०पांचेमहाव्रतक
राकल्लितसहंत॥पवस०
पांचसमतिनइविषइ॥सु
द्ध०जलीपरिषआउत्तो०सा
वधानपणइपालइ॥सेषं
पूर्ववत्॥४१॥छकाछका
यघकाय०षडि०समस्मर
कारइनिवर्त्या॥सन्नन०
इहलोकाद्यिकाजयना
ठामातमारहितमतिजेह
नाएहउकरइसंघा
रउ॥सेषपूर्ववत्४२॥अठ
म०आठमदजातमहं
ऐश्वर्यमदबलमदरूपमद४तपम
क्रतिमदलाजमदसूर्यप
आठमद॥जठोरहित॥

THE ASIATIC SOCIETY OF BOMBAY

रप्रम्मसंघयणानरुधणी अ
ष्टप्रकारइकर्म्मरवपावइ॥
अणु० तत्वारित्रनुपालणाहा
रवारित्रपालतनइसु० साधु
पदइरस्युएतलाकर्म्मक्षेपवइ॥
साहु० पर्यंत आराधनानुकर
णाहारसाधुजेतलाकर्म्मचा
रित्रपालतनइषपावइ॥ततलो
कर्म॥तिहु० तसंघारानरुणि
वनवानस्मइ॥साधुजितलो
कर्मषपावइ॥तकर्मषणावा
नणासाधुबोलाइसर्वसाध्या
ढेरवानणाकर्मषपावानुन
रकहुं॥४८॥हवइसुखपा
मवानुनरकहाइछइ॥तणा
०इणानरुसंघारइ॥नवि० सू
तनइषकनइणासंघारनइक
ठनतोहियणादयानरुहेते
इकल्यनइ॥मुनि० ग्रंथनन

जुन० संघारइरत्नाहृषकनइरेघानइश्रिष्यगुरुनइपूछइ॥गवि०नइमधु
अणसणानाम्याछइ॥तेहनइवलीकेहवानइ॥मूलतिय० मद्याछिइरात्ना
कषायनेणाइ॥वलीकेस्वानइ॥निद्वि० हावभावादिविषयविकाररहेत
नइ॥नाणी० पूर्वप्रनगवनकुरुणाकरि० कहेनइत्नानं॥संघार०एहवइ
गुणकरीसहितश्रमणानइसंघारइरत्नाहेतो॥४६॥पटाम० युरुविणा
घाइनरकहुइछइ॥संघाराएहवडुपानोपहित्नाहिनवुत्नानकहुइछइ॥
संघारानइविषइरत्नाइछइजेश्रमणसाधुतेहनइ॥जेह०जेतलुत्नानकरे

पटाम्हुगंमिहिवासं संघारगयस्सजोनवलाभो॥कोदा
णातस्ससक्कंकाउं॥अग्घंअणागघस्स जोसंखवासनव
छिइसव्वंपिरखावइसासतेहिकम्मं॥अणुसमयंसाहुपयंसा
हुवुत्तंतहिंसमए तणासंघारनिविन्नोवि मुणीव
रोनहुरागमयंमोहा नपावइमुत्तिसुहं कांतंवक्कव
दृवि॥मुनिसाधु॥तकेहवनहुइतमुनवर॥नहु०रहितग
इछइ॥रागः गारद्वेषा॥मह०न्यात्यादिमइ॥न०निघाद्यादि॥न०जेए
तेलारागादिमूकाघा॥पाद०मामइ॥निन्न०मुनिसुखकर्म्मक्षयनए
लवलेसघकाआनंदफएसंतोषसुखपामइकतो०तेसुखसंतोष
रुपकिंचाघेचक्रवर्त्तिनइपणाअपिनकुइ॥अपिशब्द
घाइंद्रापिनपामइ॥४७॥

इछइ॥कोणहवडुंतेलो
नकहासइ॥कनणकरु
वासमर्थ॥अग्घ०कनणा
मूलकरासकइअमूल्ति
कवस्तुनजिमअमोलिक
रत्नादिकनुमूल्नकोकरीन
सकइंतेमअणघस्सए
कहिनानासंघारनगकोइ
मानकहानसकइ॥घणा
लानघणासुखमाटिइ॥
४७॥जोसं०संखातासमयुघा
नानवरिछिनछइजहनइ
तचारित्रपडिवनइमरंको
कल्पइअसंखातावरसना
आयुघानामनुष्कनइचा
रित्रनहुइ॥सव्वे०तेसंक्षा
ताकालतांइचारित्रपाल
तनहुतउ जेतलांसर्व
कर्मषणा वइ॥सोतहि०
सोतसंघारानुकरणहा

छइ॥माहोहु०अहोशिष्
नुघणावरसदिक्षानामगि
णिइहांघणावरज्ञानुमा
हात्मनघीपाल्यानुमाहात्म
छइघोडइपणांकालन
राकरानर्षिइअप्रमा
णइआपणूअर्धसाध्यउ
ननछ०इहांकांइवरसनग
णइएहनइहिलतीधसघ
णावरसघयापहनइएहनइ
घोडावरसघया॥तेनणा॥
बहवे०घणाघणाउकालग
छमाहिवजपमादनइवस
इवशआत्मानुअर्धनसा
ध्यउ॥किंउ०जन्म॥तनमर
णारुपसंसारसागरमाहिखू
ताबूडता॥जयंतेराजर्षिव
तु॥६०॥पछा०पहिलुपमार
इवशनइपछइअतिवछ

निष्पुरि०निनआपणांपुरुषनइ॥नाड०नाटकइ॥तसा०तेणाइनाटकि
तेहवारतिकुंहु॥तेनाटककेहवउछइ॥तहसहु०तेमआपणइहा
थाविस्तारानइविन्नालबहिकरीएकलापुरषनारुपनासहस्सका
ढानइबत्रीसविधनाटककरइ॥तणाइनाटकइतहवारतिपामइन
हा॥अथवानि०निकेवलपुरुषरहितएकलास्त्रीजनावदविन्नावी
नइनाटिककारावइतेणाइनाटिकइथणितेहवारतिनकुइ॥केहवा
निप्पुरिसनाडगंमिवानसारइतहसहस्सछविछोरानिणा
वयणंमिविसालेहिंसहस्सेवगूढंमि जंरागदो
समइयंसोरक्कंनहोइविसयमइयंवअणुहवइंवक्कवट्टी
नहोइत्तंवीयरागस्स माहोहवासगणायाणंतछ
वासाणिपरिगछंति बहवेगचुद्धा जंमणामरणंतत
खुत्तं पछावितयायारिवयंकाहंतिअप्पणोप
छे जेपछिंपमिकालेमरंणतिसंघारमारुढा॥तवेहा
रायासलगरानरिषनीपरि॥पया०अयगामीघया॥इमअन्नेक
पहिलुवृधानइपरीसहइजीत्यनघकगपछइविचरीउत्तमरणआरा
धइ॥अथवापहिलुवृद्धातविहारापया पुढरागनसुकुमालवत्॥त
धापहिलुनघमपंडितमरणइछयाआवतीसुकुमालवत्॥अथवा
पयाविगलाघयानिंदागहनाादोषघका॥खिप्प०साधुचतावलाकरइ
अप्प०आपणाआत्मानइ॥पछ॥पूर्वमनुनापरिसबलनइहितरतघाहिंड
उ॥जेय०जेण

इछइ॥कोणहवडुंतेलो
नकहासइ॥कनणकरु
वासमर्थ॥अग्घ०कनणा
मूलकरासकइअमूल्ति
कवस्तुनजिमअमोलिक
रत्नादिकनुमूल्नकोकरीन
सकइंतेमअणघस्सए
कहिनानासंघारनगकोइ
मानकहानसकइ॥घणा
लानघणासुखमाटिइ॥
४७॥जोसं०संखातासमयुघा
नानवरिछिनछइजहनइ
तचारित्रपडिवनइमरंको
कल्पइअसंखातावरसना
आयुघानामनुष्कनइचा
रित्रनहुइ॥सव्वे०तेसंक्षा
ताकालतांइचारित्रपाल
तनहुतउ जेतलांसर्व
कर्मषणा वइ॥सोतहि०
सोतसंघारानुकरणहा

लिनवबनछइत्त॥विसा०स
र्वगुणेकरावसाबविस्तारा
छइ॥वनाकेहवनछइ॥हेग०
हेतुतेसरखेकरा॥गपगुढस
तछइ॥एपरमाघः५०॥जेरा
ग०जेरागमयसुखपूत्रकत्त
व्यादिनइखेदइगपनुतेरागम
यसुख॥दोस०वैराग्यादिनइ
नापवइसुखतहषमयसुखा
सुखइं०रागद्वेषविषयघासु
खते॥विषयमयसुख॥अणु०
वक्रवर्तिनोगवइ॥नहोइ०
तेनोइमयअर्धिसुखकर्मबं
धयुरुयवीतरागनछइ
जेनणावीतरागइमोहसर्व
घापकारइनाणावीतराग
नइअनंतज्ञानमयसुख॥
५०॥गुरुशिष्यप्रतिइकहइ

लए संथारउ करवइ तत्कर
ठइ॥ हवइ षष्ठमसंलेषना
वषा॥॥ इहठइ॥ पहिलेंयुरु
नाआज्ञातेइ नइ॥ ३ ऊंव०
चारिविविधा इं॥ विगईनि
र्यूहियाश्चत्तारि॥ संवछरय
यदुन्ना॥ एगेंतरियंवआयामं॥
नाइविगिठायतवो॥ छमासे
परिमियंवआयामं॥ अन्नेवि
यछमासा॥ होइविगिठंतवोक
म्मं॥ वासंकोडीसहायो॥ आ
यामंकट्ठआएपुन्हाए॥ तिरिकं
दृनइगेइ॥ पायवगमणंअह
कारइ॥ २॥ पहिलाच्यारिवर
सतोइविचित्रंपकारउतपकर
इ छठ्ठठ अठमाइ॥ बाजेस्वा
रिवरसविगयछाडीनइतपक
रइ॥ बिवरसतोइएकोतरइ
पचासकरइ॥ पारणइआंब
लकरइ॥

बिलारअंतकालइ॥ मरं० मरइ॥ संघा० संथारुकरीनइ॥ ४॥ कोरुवइ
रुनकइसंथारउकरवइएप्रश्निष्यपुछइहवआयुरुउत्तरक
इछइ॥ नविका० काइहणा॥ नासंथाराउकारणानघीसुद्धनावविना॥
संघा० कासुत्रमिनुपणा॥ कारणानघाकिउ॥ अप्पा० आत्मानुंसुद्धना
वडिहांतनिश्चइसंथारउकरइ॥ इहं० विसुद्धअतीचाररहितचार
टुइतिहांसंथारउ॥ ५॥ हवइकहवानइकेहवइक्षेत्रादिसंथारउ
करवउ॥ निस्व० सदा॥ तसातहेपकनइ॥ च्यवु० मदाइसरलनाव
नविकारणंतणाम संथारोनवियफासुयाचूमा अप्पाखलु
संथारा दोइविसुधाचरित्रमि निश्चयितस्सजावुछुयस्सा
जत्तिवन्नहिंवसंथारा तोहोइत्रहखाउ विहारमनुहिनलुहो
वासारत्तेमितवा चत्तविचित्राइसुबुकाऊणं हवंतसंथारो
आरुहइसहवछासु असायपायत्तपुरा अन्नानामणपुक
चूलंति आगलाइप्रसवाडाआकरउतपनकरइ॥ पर० अन्यआहा
रनइओदनकरइ॥ अनेराइमासअतिआकरउतपकरइ॥ ११॥ एकवर
सतोइआद्यअतिसरिषंओंबिलतपकरइ॥ पर्वतगूफादिकइजइन
इसंथारउकरइ॥ वासा० वर्षारतिसंथारानउकरणाहारतपकरइ॥ चित्र०
नानाघकारइतपकरइ॥ सुबु० अनिशेषनअधिकपणाइतपकरइ॥ ते
मंलं० पछइसंथारानउकरणाहारतीतकालादिकइसंथारउकरइ
मुक्कसन्नावइकारणाविना॥ सद्य व० आउघानइअतिआपदाआवी
नाणानइसर्वअवस्थाइसर्वकालइसंथारउकरइ॥ ४६॥

माया कपटरहिता॥ जन्नु० जेणा
इक्षेत्रइगामनगरादिकनइ॥
जन्नंव० जेणाऽकालइहिनरात्रा
हिनइविषइ॥ अथवाग्रीष्मऋ
तादिनइविषइ॥ संघा० दर्भ
कुससरइणादिलादिनइवि
षइजावमुक्कइसंथारउकरइ॥
जन्नोएहवउजेसाधुइ॥
अस० जिनाकृतमार्गेनउचा
लणाहारसुद्धमार्गेपरुपक
तविहा० इंघतविहारमरणा
विहारशीलखनाविहारए
तलइबारवरसनासंलेषणा
नुकारणाहारा॥ तेकेहवछिइ॥
लूहो० संलेषनाकरवाघकारा
णादिनइअन्नावइलूहा॥ इहां
विकुप्रकारइतेपकनइसुधि
कृत्ता॥ ५५॥ ८ हवइजेणा
विधितपकरानइजेणइका

तेबुकुडामञ्झिहियासघाए
णेबुकुडातेहिनावाणहिं
पाणाएबुकुडातेवयणतिस्स
त्तणविद्धानासमुपसंहृ
रहिमहिमाकयापयागति
त्ति॥ नायंसंपुर्णकहा॥ वस्यक
पूर्णिनानेया॥ संगंगापुत्तर
नूसहसातनइछाणदिवनावि
केनीवायइअरितः॥ प्रति
पन्नउत्तमाट्ठी॥ तेणवि० तेना
पिमरणमाराधितपन्न॥ हवइ
गाघात्रउहंबधकुमारनइसं
बधकहइछइ॥ पंचस० पांचम
हाव्रतइकरीसहितां॥ पांचस
म अतिहिरागद्वेषनाजीपणा
हारहुया॥ नयर० ऊनकार
नगरनइविषइ॥ झंड० कंड
गनगरनइविषइ॥ घाणीमा
हिघालीनइ॥ तइ० इईपा

हवइजेणाइसंथारउ आराध्यउतेहनामहामइकराउहारइरणइ२
गाघाइकहइछइ॥ हवइत्रिणिगाघाइसमधमहा॥ आसाढेगंगानइत
टपोतनपुरनगरहुतो॥ अत्रिपुफचूलानामइआयाहुता॥ तीसध०
तपुफचूलानउअरणकापुत्रआचार्यधर्मआचार्यगुरुहुतो॥ अवि
सु० व्याख्यातकार्त्तिअरणकापुत्रनमइहुउ॥ ५७॥ सोगंग० तेमुनिवर
गंगाउत्तरतउकेवलज्ञानउपनउ॥ सरसा० सरसातकारइनाबा
घाउआरउ॥ उत्तरमथुरातावोमथुतोरहिणमथुरागतः॥ विति
ग्रगनाअर्लिका॥ मार्ठिपुत्रोनाद० धवलितोवृद्धवेषुध्यनइमतउ
तासधम्मायरिअविसुअत्तिआउत्तो समागमपुसे
रंतासहसाउत्तारिउन्नाणाएवठिउन्नंउत्तमठंतणविआ
राहियमरणं पंचमहव्वयकत्तियापंचसयअज्झयासुपु
रिमाणंनयरंमिकुत्तकासयकडगमिनिवसियातइया
पंचसयाएगुणावीएणपरिजिलहणंनंतमियावमइणा हुन्न
हुत्रेणकम्मेणा॥ इ० वल्लायतापणइ॥ एगः पांचसइकम
णएकऊणउत्तेमूलगउविराधकजणाउगएवउ॥ अन्नावक
ज्झासहइतं० पालकरीसाणइघाकरइ॥ तंतेघाणीमाहिपाप
तीइघात्ता॥ हुन्ना० तणइसरारहइ॥ तोश्कालणइमाहेतइसुक
लध्यानइकरीकर्महुंद्या॥ अनुक्रमइमरणाआराधीमोक्षगयाइ०

वोतनपुरंगता॥ पुफकेचूत्त
यपुफचनाराणी॥ तोपुफचू
लःपुष्पचूलावक्षिप्रंधो
ग्राप्रबोधिताहुतिनिश्चइथी
निश्चनाता॥ अन्यतानिश्च
यहारितायाःपुष्पचूलाया
कवल्यौत्पन्नज्ञानावाप्तानंनि
वृतपौषधाचरणातोत्रग
वन्नुत्तवतामभिगमणंउत्त
रतोकवलमुत्पन्नंयत॥
ततोसोऽहत्वंगंगाया
नाबामारुढःतत्रनजराधि
ष्ठात्रीसविनासूरिनक्का॥
नदीष्टातदेवताउत्तस्या
प्रत्यनिकातयाचिंतितं॥
नदायवैरिणायुरुयमा
रिपतव्याइतिचिंतनेएंजे
णंपापंसंचिलगंतिते

नोगी पुरुष एणइ॥ अन्य दा पुरुषा सइधर्म सो न ला वि पुरुषा पा त्रीसमका त्ति इर मित्र इदिक्षा ला धी लि इनइ गुरु पा सइ ना॥ त्र न एणा घ णा इ का ल सं य मप ल पइ॥ प छइ वे शा म्प पा मा स ला घ ना क रे नु ज्ञा व इ य नु॥ प इ॰ न दी न इ ती र इ का ठइ का ष्ठ मो टो प डो कु तो॥ तो ते का ष्ठ सिया न प रि इ ज णि घ त्ये क र पा दो ग म न अ न स न य उ व ज्यो॥ त ल त्रा स इ के इ वा कु ता॥ स घ र॰ अ ति सं द्धो त सु त्र ना र हि स प र मा र्थ ज्ञा ण कु ता॥ ए॥ ज ल॰ ति ह्य आ काल राम घ वृ ष्टि न इ नो गि न दी इ पू र

ते इ ना अ र्घ न इ ज्ञा ण॥ ए बि दु इ क रा वि सा इ र्य पं डि त वि च ष णः व ल्ला क इ व इ॥ सु य॰ स त्र न इ र इ स प र मा र्थ न इ ज्ञा ण॥ ए ता व ता सि द्धो त न इ क स व इ॥ का यं॰ का कं दी न ग रा इ॥ अ इ॰ अ घ ते इ षि रा जा इ ज्ञा त रि इ द्यु त वि हा र क र त इ अ न्य दा पु स्ता व इ॥ प तो॰ का कं दी न ग रा इ आ व इ॥ वि ग॰ ह र्ष वि ष वा इ र हि ता॥ ७॥ ना मे॰ चे इ वे ग ना म इ रा जा न इ मं त्र रा जा इ पू र्व इ दु इ म इ छ इ॥ अ घ वा सा र इ सु य इ इ सो का यं दी वे व पु रि अ इ रु ष्प न्नो वि ग य सा गा॥ ना म ण चे इ वे गो अ इ रु सो प डि हि इ इ त यं दृ इ सो वि त इ छ न्न द्दो प डि व न्नो इ न मं अ ठं को सं बी ए न य रा ए त त्ति य घ ज्ञा ना म वि स्सु या आ सा पा इ व ग म नि वि ढा बा ता सं त सु य इ इ स्स न ल म ज्झे इ गा ठो न इ ए यू रि ण नि म्म म स री रा त इ वि य न ल इ ह म ज्झे प डि व न्नो इ न मं अ ठं॥ आ सी क्र ण ा ल न य रो रा या ना मे ण वे स म ण दा सो न स्स अ म्ह ारि ठ्ठो मि च्छा दि ट्ठो प डि नि वि ट्ठो॥ ८॥ आ यं॥ पू र इ त ण ण ष्ठ का ति ज ल मा हि इ ह मा हि न ल्ला॥ ते अ ण ा गा र क इ व ा ठ इ॥ नि म्म॰ चू रा इ न ी म म ता र हि ता॥ न इ॰ त ण इ मु नि व इ ड्ढा ण ा न इ ह मा हि बू ड ता थ क्का॥ प डि॰ सु न घ न इ न ल्ली ज्ञा व ना इ क रा इ स मा र्घ पं डि त म र ण आ रा ध्म इ॰॥ अ घ गा म्भा च इ ष्ठ ये न सं ज ध मा हि॥ आ मा॰ कु त इ॥ कु ण॰ कु ण ा ला ना म इ इ ट्ठी ण ा न ग री इ ते इ न इ सा मी॥ रा या॰ रा ज ा न इ

अ ने रु को इ रा जा नो व इ रा त॥ प डि ठ्ठि॰ अ म्ह त घो ष रा ज र्ष वि॰ पू र्व कं अ ण ा स ण ा ल इ न घ॥ रा ज ा र इ र स्सु ठ्ठ॥ ते ल्ल इ इ ति ण ा व इ रा इ प डि इ स म स्स प्र का र इ ठ्ठे इ वा वि रा ज्ज न्ता ण ा द इ न श॰ सो त ते अ म्ह त घो ष रा जा वि ति म ट्ठि रा ते इ स्स क इ सु ज्झ न्न इ न म मा र्घ आ रा ध इ कु॰ अ घ गा म्भा ये न सं ब ध्ध ना इ॰ को सं बा॰ को सं बी ए ग र ज्ज इ वि ष इ॥ ल लि॰ ल ी ला ब ल ी ला ना क र ण॰ स च इ ट्ठा ना चा त्त ण ा द्वा र ा घ डा॰ पु रु ष प इ ति प्र त्रा नो स मु दा य ए इ वी ना म॥ वि स्सु॰ ग्रा ११ ख्या त न स इ तो ग्रा ल्ल ि न इ ना पु रि

सा वि॰ ते मा इ त सु न व र सि इ से न आ चा र्य॥ न इ॰ ते ब्भ ल ता अ क्का॥ प डि॰ सु न घ ण म इ ज्ज न मा र्घ आ रा ध्म इ त्थ॥ कु रु॰ कु र द त कु मा र ई ज्ज न इ पु त्र ते ण इ वि रा ग इ हि ज्ञा ली धी॥ सिद्ध॰ ते इ न इ अ ग्गि न इ प री स इ कु इ नि म सं ब त्त वृ क्ख नु फ ल त घा पा ग्गु अ ग्गि क री ज्जा इ क्का ल्लि ब ल ा न स्स घा इ॥ सो वि॰ त प ण ा अ ण ा गा र ण त इ॰ ते पा डा या दि ना प रि॥ उ अ॰ दा अ त इ ष्ठ क इ॥ प डि॰ सु न प रि ण ा म इ क री इ ते मा र्घ सं घा इ प डि ते म र ण ज्झ प्पा रा ध्म इ॥ अ त्र क घा ल्लि ब्य ता इ ज्ज ण ा ग पु र न ग र इ वि व र क न्न इ व रा ग ण प्प मा हि ज्ञा ली धी॥ सू त्र सि द्धो त न ण ा ब्भ इ अ त घा

ना म वे अ म ण दा सा त स॰ ते इ रा ज्ञा न इ मं त्री प्र धा न रि ष्ट ना म इ म इ त इ इ॥ मि च्छ॰ मि च्छा रो ट्टा म ति न इ ध ण ा॥ जि न सा स न नु प त्य ना क इ ट्ठी॥ अ इ॰ जि न ध र्म न इ नि षे ध इ॥ ए ा॥ त च्छ॰ ज इ ज ण ा न ग री न ज्ज ा मु नि॰ मु त्ते व र इ ष ज्ज स म ग्गे प इ क्ख न आ चा र्ये नो पे ट्ठी दो इ सं गा सू त्र रु य त इ न ा ध र ण हा र॥ त इ ा॥ ति हा इ न्न इ आ चा र्यो॥ ना मे॰ ते इ न इ ना म रि ष ज्ज से ना॥ सू य॰ सू त्र रु य सा ग र स इ इ नु पा स्सा म ा॥ धा रा॰ धी त च्चा य मु ण ी व र व स र्द्दू ल ग ण ा प डि ग धा रा त इ ा सि आ र्य रि इ ना म ण ा इ स इ ा स ो॥ सु य सा य र या र ण ा धा रो त स्सा सा य ग ण इ रो ना ण ा सु ज्ज ल ग ज्ज सि य पि या ल्ली ना म ण ा सी इ ा स ो॥ वा ए ण प रा जि इ रु ट्ठा अ इ ा सा नि रा ण ु कं पो॥ अ ग्गि इ क ण सु वि हि य प सं त सा वि त इ ज्झ मा ण े प डि व न्नो इ न मं अ ठं॥ कु रु द त्तो वि कु मा रो सि ब्बि फा लि ब्ब अ ग्गि ण ा इ द्धो सो वि त इ ज्झ मा णो प डि व न्नो इ न मं अ ठं॥

यु॥ अ न्य दा प्र स्ता वि ए क ज्झ वि हा र प्प ति मा प डि व न्नो॥ ते सा धु सा के त न ग र न इ स मा प इ॰ आ ध्य इ॥ ति हा वि स्सा न्तो ध्म को पा ढ्ढि त्ती वो रि सा इ का इ स ग्गि र इ ज्ज इ॥ त ण इ अ व स रि को ई ए क गा म नु ध म्म चो र इ रा ले इ वा ल्ला प र गा म इ न्ते इ ग या॥ के उ इ वा हा र च इ॥ ते वा हा रु पा ग जो ता जो ता आ ण ा र पा स इ आ य ा ति हिं वि वा ट्ठी ढा ते स म रु न प इ इ सा धु न इ पू ज्झ ए क इ वा ट इ त्त ई ज या॥ प ढ इ मु ना व र न इ मा घ इ ना ल्ली मा री ना प ति बो धी॥

री अ ज्जो न पु री स इ इ प रा ग स इ वा स म घी॥ ए ा॥ त स्सा॰ ते आ चा र्य न इ ल्ला ष्प कु त इ॥ ग ण॰ आ चा र्य॥ ना ण॰ अ ने क प्प का र इ सू त्र ता इ न ा अ र्थ ग र हा या ठ्ठ इ॥ प या॰ प र मा ण वि चा र नो ज्जा ण॥ ना मे॰ ना म इ सि ह से ना कु वा प॰ ता ण इ त्ति इ ा स न ज्ज ण ा गा र इ नि न रा स न न इ च्च म त न इ ष्ठा प व इ क्ख रा॥ प रा॰ प र न्न व इ नि ज्ज इ नि प ष्ठ व्या ग र ण ा॥ का ध इ रि ष्ठ ना म इ म इ त इ ता इ न इ॥ अ इ॰ अ घ ते ते॥ सो॰ त ण इ रि ष्ठ पा पि ष्ठ प्रा ध्म न इ॥ नि रा॰ अ न्न कं पा द या र हि ता॥ ते ण इ पु र्व ं ता ल ो ष्ठ मा हि ने का ध इ ते क इ इ ठ्ठ इ॥ अ ग्गि॰ अ ग्गि दे इ न इ सु वि हि त सा धु न इ बा ल्ला॥ प स॰ सू ता घ का न इ॥

ल्ली॥ ति मज्ज वाहर इ पुढ
उ ति मज्ज अणागारनवो
ल्युतरुनइरासवडी॥ पढ
इत्तणाइरासवसइ॥ अच्छ·
ली मनालुबंबडइउ पेधवा
लइक्षोल्लाठो कावधरइति
मनूम नइतलइअ ोइपा
गविस्तारीनइक्षोल्लाठोका॥
तणाइसाधुइवेदना अहाया
सीपंडित मरणसंघारउ आ
राध्यउ॥ ८७॥ पख·मख लो
पुत्रश्रअर·अरिहंत नगवं
महावीरनोशिष्यछिरु॥
जेय·तेनूल्लेणानइग्रप
णाइआकरपणाश॥ ८८ घे·बो
ल्लाछ॥ तव·तेणाइपत्तिदाऊ
नोधकांसमंइज्जावइ॥ एडि
पंउत मरणसंघारउ आरा
ध्यउ॥ ८८॥ परि·संघायन

वहिमाहिघाबतातीअंगोल्लिनइमूक्यामाघशतेणाइजगचनइ
समग्गपकारिअहिमास्पुं॥ सुनधनइउ तेमार्घसाधउ॥ ८५॥ आ
सा· दुउगजग्रहनगरा माहि॥ छिल्ला· धनावासेठि नाहासीव
ल्लाइते हनुपुत्र चलाइपुत्रसूसमनूरमाइणाहारइज्जातासद्यइसि
धा॥ नावसूसमानुमस्तकाल्लिउगयु॥ मुयंग· काडीइफोल्लानइसूग
धीमाघालगइचाल्लणानापरिकाधउ॥ सोवि·तचलाइपुत्रणी

आसाविल्लाइपुत्रीमुयंगल्लियाहिंचाल्लिएघक्का

सीवितदखद्यमाणा॥ पडिवन्नोउत्तमं अढं आसाग

यसुकुमाल्लो अल्लयरम्मकाल्लियतसएहिधरणायल्लिस

द्धा तेणविआराहियमरणा मंपवलिणाविअरहउ

मासातयस्सउवगयाहुहो तवितदउत्तमाणा॥ पडिवन्नोउत्त

मं अढं परिजाणाइतिगुतोजावज्जीवाएसव्वमाहार

उकरणाहारा आहारनउछाडवज्जाइपरिज्ञाइहितनुकरणाजाणा॥
पच्चखाणपरिज्ञाइआहारपवयइसतसाधुकहवउछ॥ तिगु·मनक्व
नकायाएचूछउ॥ तकमपचखइ॥ नावज्जो·नावज्जोवछहलाऊ
सासत्तगइ॥ तविप्रथमत्रिणाआहारनउपचखाणकरइ॥ अथवा
चारिआहारनउपचखाणकरइ॥ तविकिमकरइ॥ जवदंसिमपचखा
मि॥ चउविहंपिआहारंअसणंपाणंखाइमंसाइमं अन्नहणा

तेणाइकाडीइखासोधकउ
लोहाइपंगधरछोकुतातमा
टिकाडीइफोल्लत्तइ॥ अत्रक
धायत॥ जोतिरूपपहिसमं
सजनुसंयमेसमारुढा॥ रूप
समविवेकसंवरा चलाइपुत्र
नमंसामि॥ धीरो चलाइपु
त्तो मंगल्लिहिंचाल्लाणा कउ
सीवितदखद्यमाणा॥ पडिव
न्नोउत्तमं अढं॥ पंडि·मुन
परणामइउत्तमार्घसंघारउ
आराधाकालकरउ आठम
इदवलोकिरगयु॥ ८६॥ आ
सीग० कुउगजसुकुमालना
मइईजनुपुत्रकुरुदेशना
परिवेराग्यइहिकालीधा॥
कृतअछातव्याएकलवि
हारपडिमापडिपन्नरुपते
णाइपत्तिमार्गेइकानुसगर

कसुकाराव्युअन्यमोद्यउते
मर्वअपराधखमावइठइ॥
एं॥ सवे·सघलाइअपराध
पदआसातनाउइरुप॥ सच्च·
तपअपराधखमावउकुआ
जोलकेदवइधकउ॥ अद्य·
अज॥ निस·शिल्प कुलधमउ
त्तरुपते हघोरहितेणापूर्वयु
कसंघसाधुमहायत्नीआसा
तनाटालीनइखमावबुकहु
उ॥ हवइमातापितादिमाआ
ज्ञातनाटालानइखमावबुक
कहइछइ॥ अम्मा·माताषिता
सरषाकरीनमानिममाताषि
ताउपरिअनुकंपानइत्तरद
एणउकुइतिमसर्वजीवसंघा
तइलकेहा॥ इधवाआदिप
र्यापूआधर्यापू॥ त्रिदइसर्वमि
लीपांचसइत्रिसठिपदइत्रिद

जोगेणंसहसागारेणंवासरामिपतेपकंतंउकरइकिवाकोहनीसाखिकरइ
लोकहुइ॥ संघ·संघसमुदायसाधुसाधवीश्रावकश्राविकाएसंघसमु
दायमाहि॥ सागा॰सागार॥ अणा॰अनगार॥ सहितपचखाणकरइ॥ गुरु·गुरुना
आज्ञाइविनयपूर्वकनेवचरिमपचखाणकरइ॥ ८७॥ अरु·अथवा॥ सामा॰
समाधिनइहेतइ॥ बितिघिरासवाजणा॥ करु·पूर्वइप्राणानउआहारमोक
लनउराध्यहुइ॥ तेपाणीनउआहारकरइ॥ तउ·तिवारपहीमनथिरनाली
नइपाणानइपराछहुलनइकोत्तरावासिरावइपचखाणकरइ॥ घुणी

संघसमवायमज्झे सागारेणुरुनिग्गहेणं ८७ अहवासमाहिहेउं क

रइसोपाणगस्सआहारतापाणगंपियछा वोसिरइघुणीजहा

कालं ण्ण खामेमिसव्वसंघं संवगंसेसगाणकुणामोमो मण

वयनोगेहिपुरा कयकारियं अणुमएणविण्ण सव्वे अवराहयया

एसस्वमाविमिअछनिस्सल्लो अम्मापिकुलासरिसया साहवि

खमंतुमहन्नोवण्ण धीरपुरिसपन्नत्ते सप्पुरिसनिसेवियंपरम

घोरं धन्नासिलायलगयामहन्नोउमं अढं ८७ तिसमइन्नावा॥स
वे·एसर्वजीवउपरिअनुकपाइस्मेइकोधउनकुइवेषकोधउकुइतंखमवउछ
उंदेखमजो॥ ८८॥ धीर·एपंडितमरणकउणाइपरुपणाकणइसेवउतेकहइ
कुइ॥ धीरपुरुषतीर्थकरगणधरादिउत्तमपुरुषइप्यरुप्यउ॥ एमरत्नतइअहरु
हइता॥ सुपु·जेणाइश्रावकउतकहेछइ॥ सुन्नपुरुषइपुंडरीकादिगणधरमहापु
रुषासत्युं॥ परम·कायरपुरुषनइआधारनांदीसिलउ॥ धना·तेधन्यसात्तनहो
दि॥ सिला·तेणाइसिलाइसंघारोकरीइतेसिहिसिलातेणाइगतिपुंडरीकासंघारउ

साधुयघीअवसरनाणा
नइज्जावज्जीवनउपच
खाणकरइ॥ ८० खामि·
करपोजलजोडीनइक
हइमाहारुअमर्घअप
राधकुइतेकुखमावुकु
उंदुहेषमजा॥ खमानइ
खमावइ॥ सवे·मोक्षनउ
अभिलाषी॥ सवेगीघ्रो
पतलाचोनापामइ॥ यत·
सिद्धदेवलोकोमुकत
पत्तोहोइसंवेगा॥ सस·
मेषमुनिवरनइखामानइ
खमावइविनइपूर्वक॥
मण·मनवचनकायाएक
रासुद्धपणा॥ पुरा·पूर्वइ
अपराधकीधउमनवचन
कायाएकवत्तमनवचन
कायाएनहा॥ किंउ·कंय·

इ नारकी ना वेदना वर्णवी ते कोई नारकी नइजे नडुइ॥ किंत्र
दव तापणइ उपनइ कइ पणि
इर्ध विषवादिक तघाइजा दि
कदासी ना परिपराजव करइ
कार्य करावइ वज्रा दिकइ ना ड
इ दुषउपजइ इत्यादि वेदना नो
गवी मानसा॥ मणु मनइ करी पणि
इजे कइ उपना तकरइ॥ घुग
खुधतृषा पंगुला बिहरी धा
डु स्वरा डुचेना हीना दीना रा
रिद्र। उपद्रवा रोग। शोका इ
ष्ट वियोग। अनिष्ट संयोग।
जन्म। जरा। मरणादि॥ परा पर
वसपणइ पडुता पइका॥ डुख
सारीरी माणसा परिमुखस
मस्त प्रकारि केलेसना करण
हार॥ अणु अनंत जवे
अनंतीवार जोगव्या। एहव

पारि पडुचाडइ उत्तम ज्ञानी विसिष्ट धर्म नआराधनारूप॥ एहि॥ हवइ गुरु
शिष्य नइ चतुर्गति संसार परिभ्रमणरूप शिष्या देषाडइछइ॥ नारय जीव
नारकी माहिजे डुख पाम्यउ॥ तिरि तिर्यंच मनुष्य नी गति माहि जे डुख सु
षपाम्यउ॥ देव पूर्व इरषवंता माहि सातारूप सुष पाम्यउ॥ ते सुष डुख
॥ अणु वात वस्यइ॥ अणुत्र एकाग्र विउ॥ एहि॥ नर नरग नइ विषइ
वेदना सातउ स्यादि। परकारे वेदइ॥ यदाह॥ शीतोष्ण दंस मशक क्षुधा पि.
पासा पदाघ वधबंधरोध शोक नय कडुर्ण पारवश रुज्या दंडा प्रकाराय तउ क
नारय तिरिय गइए माणुस देवत्तणे वेसंतत्ते नंपत्त सुहदुक्खं
तं अणु वंत अणु त्त मणो नेरइसु वियणाउ अणंतवेमाउ
असाय बहुलाउ कायतिभिन्नपत्तो अणुत्तरवुत्तो बहुविहउ
देवत्त मणुयत्त पराभिउगत्तणे उवगएण दुक्ख परिकिलिसक
रं अणंतखुत्तो मणुत्त तिरियगइ अणुपत्तो नाम म
हावियणा अणोयारो नेमणामरणारहट्ट अणंतरकुत्तो परिभ
मिउ
संसारचक्कवालकरणहारचितवशाएहि॥ हवइ तिर्यंचगतिना डु
खकहइछइ॥ तिरिय तिर्यंच गतिइ पडुताएका॥ नमी० रोद्र बीहामणा॥ म
हा मोयवेदनातेकेहवा॥ इक्कडइवउ गलवत्रेना कानछेदना पुछनउ कापव
उछवा नारा छेदवउ। रेषाखुधा नउ सहवउ। नारवाहवादियाएवातवु
श॥ अणो उपमा रहितपारनपामीइइ॥ वात्तइत्था॥ अथवा वेदउ षधादि
उपवारहित॥ जम जन्ममरणरूप अरहट्टछइ वारंवार आरोपणक्रम वत्त
वाल्ल संसारतइ नइविषइ॥ अणंत अनंतिवार जम्यउ संसारमाहि॥ ए॥

व॥ अईसायं अईउनूं।
अईतन्हा अईखुहा॥ अई
सीयंच नरएनेरईयाणं।
वेयणामयं सपगाढाणं
र॥ तेवरवी छइ॥ अणो
पमा रहितवेदना छइ
नरग नी॥ यसा डुखब
डुलघणो छइ॥ कोय विक्रो
गिडुखवास इ॥ नेरइयारनइ निमिताइ यो
इअन्नावइसिहु नइडुखन
ही। इमवातवइसंसार
नउकरणहार॥ नरगादि
कवेदनाकेतलीवोल्ला
पामी॥ अणंत अनंतावार
बहु घणाप्रकार॥ तातारि
तयानउपाववु॥ तप्तलोह
मयपूतला नइ आलिंग
नकरावबु॥ इ
त्यादि॥ एषा॥ देवात पूर्व

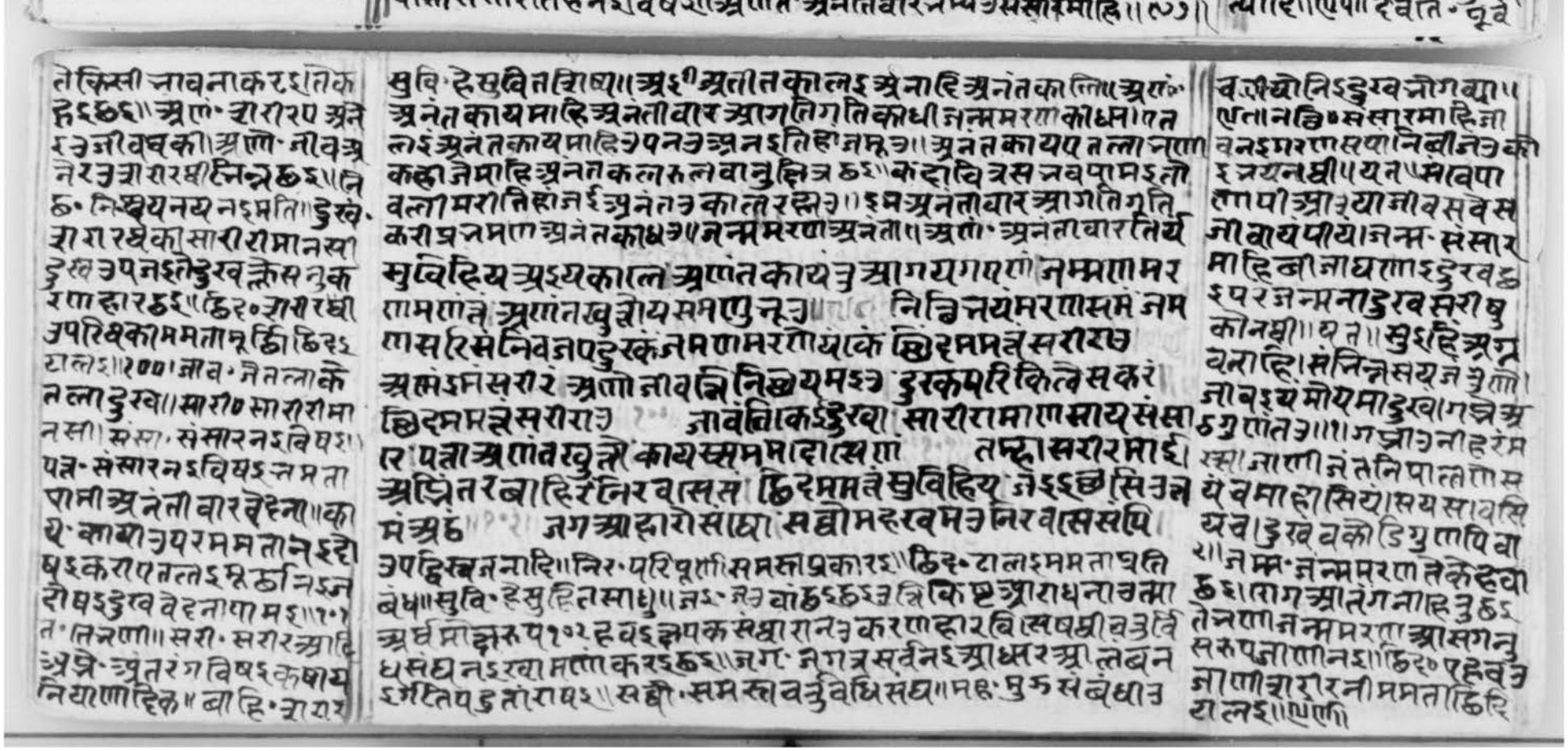

तेकिसी जावनाकरइतेक
हइछइ॥ अणु शरीरए अने
रउजीवचकी॥ अणु नीवअ
नेरउशरीरथी निन्नछइ॥ ते
छ निश्चयनय नइमति॥ डुखे
शरीरथकासारीरामानसा
डुख उपनइतेडुख क्लेसनुक
रणहारछइ॥ छिद्र शरीर थी
उपरिथकाममतामूछी छिदइ
टालइ॥ १००॥ जाव नेतत्ताके
तलाडुखा॥ सारी० सारीरामा
नसा॥ संसा संसारनइविषइ॥
पत्त संसारनइविषइजन्मता
पानी अनंतीवार वेदना॥ का
ए काया उपरममतानइरी
षइकरीएतत्तइमूछीनइज
रोषइडुख वेदनापामइ॥ १०॥
त तेनणा॥ सरी सरीरआदि
अंग्रे अंतरंग विषइकषाय
नियाणादिक॥ बाहि शरीर

सुवि हेसुहितसाधु॥ अइ अतीतकालइ अनादि अनंतकालि॥ अणं
अनंतकाय माहि अनंतीवार आगतिगतिकाधी जन्ममरणकीधा॥ एत
लइ अनंतकाय माहि उपनउ अनइतिहांजनमउ॥ अनंतकाय एतलाजणा
कहाजे माहि अनंतकलकूलवानुछित्र छइ॥ कदाचित्र सज्जवपामइतो
वलामरीतिहांजइ अनंतउकालतरूपइ॥ इम अनंतीवार आगतिगति
करी जन्ममरण अनंतकीधउ॥ जन्ममरण अनंता॥ अणं अनंतीवार तिर्य
सुविदिय अइयकालि अणंतकायउ आगयगएणं जम्मणमर
णमणंतं अणंतखुत्तोयसमणुन्नउ॥ निच्चिनयमरणसमं जम
णसरिसनिवज्जएदुक्कं जमणमरणायंके छिदमत्तंसरीरउ
अमंइमसरीरं अणंतजावंतिकेडुखा॥ सारीरामाणसायसंसा
रपत्ताअणंतखुत्तो कायस्समादासणं तम्हासरीरमाई
अप्पिनरबाहिरंनिरवासंछिदमत्तंसुविहिय जेइच्छसिउन्न
मंअइ॥ जगआहारोसाहा सव्वोमडवमउनिरवाससंपि
उपद्दिवजन्नादि॥ निर परिपूर्णा समस्तप्रकारइ॥ छिद्र टालइममतापति
बेध॥ सुवि हेसुहितसाधु॥ जइ जउवांछइछइउत्तिकिट्ठआराधनाउत्मा
अर्थ प्राप्तरूपा१२ हवइ ज्ञपक संथारानउ करणहार विसेषथी वउविं
धसंघ नइखामणा करइछइ॥ जग जगत्र सर्वनइ आधार आलंबन
इगतिपडुतोराषइ॥ सव्वो समस्तवउविधिसंघ॥ मइ मुझ संबंधउ

वज्जीयो निइडुख जोगव्या॥
एतानहिं संसारमाहिजी
वनइमरणसएनिब्बीनउको
इन्नयनथी॥ यत॥ मावपा
तापीआइयाजावसवेस
जीवायपीयाजन्म संसार
माहिबाजाघणाइडुरवछ
इपरजन्मनाडुरवसरीषु
कोनथी॥ यत॥ सुइहिअन्न
वनाहिं संनिन्नसयजन्नुणा॥
जावइयमोयमाडुखागत्रअ
ठगुणंतउ॥ गब्भाउनीहरंम
स्सजाणंनंतनिपात्तणंस
यंवमाहासियासयसावसि
यवाडुखवकोडियुत्तपिवा
र॥ जन्म जन्ममरणतकेहवा
छइ॥ रागआतंगनाहवुछइ
तेजाणंजन्ममरणआसंगनु
सरूपजाणनइ॥ छिद्र पहुवउ
जाणीशरीरनीममतातिहि
टालइ॥ एणी॥

रूप॥ अणु॰ प्रधन॥ तव॰ तपसमाधि इहलोकपरलो
कनाबांछारहित तय॥ मारु॰
रद्यइ तइछाराधनाकर
णबधकछे॥ पफो॰ विना
शातानिरजनौ॥ विह॰ विच
रइ किसु विमाणा तोविचरइ
तकरुइछइ॥ बहु॰ पूर्वेइण
इवाकर्मबाधननेघणा नव
नाबाधघणा च्यवतांइए
कुचइतइवाकाधनतकिसु॥
कर्मतेइकर्मनइफोटयति
टालइ॥१०॥ जेवे॰ नकर्मबा
धइ॥ असं॰ असखातेअसु
नजनवनेलाषकोडिअथवा
असुभपाप॥ एगस॰ समइ
विसइइणइटालइ॥ संघा॰
संघारानइविघइस्युचघक
इ॥१०॥ इय॰ निमपूर्वोक्त
गुणवर्त्तत साधुनेइनइ॥

अपराध आसातनाकु॥ खम॰ समस्तजीवपणि खमइ॥ अहं॰ सुधपरिणा
मइकुपणि खमानइखमावुछु॥ गुण॰ तसंघकइवइछइ॥ गुणाक्षात्या
दितहनइ॥ संघा॰ समुदायछइश्रीसंघ॥१०३ आय॰ आचार्य आछ गुणसं
पदायुक्त अनइवलाइछगुणेकरीसहित॥ उव॰ कुपाधयद्वादशागीसिधंत
नाजणहार॥ सीसे॰ शिष्य॥ साहू॰ सरषइधर्मइतेसधकर्मइ॥ कुल॰ एकयु
कनाशिष्य॥ गण॰ घणा आचार्यनाशिष्य तेगण॥ जेमे॰ जेए प्रतिनीकमइते

अहमविखमामिसुद्धा गुणसंघायस्ससंघस्स॥ आयरिय
उवझाए साससाहम्मिएकुलगणेयजेमे कइयाकसाया सव्वे
विहाखामिमा॥ सव्वस्ससमणसंघस जगवउ अंजलिं
करिसासे सव्वेखमावइत्ता खमामिसव्वस्स अहयंपि सव्व
स्सजीवरासिस्स भावउधम्मोनिहियनियचित्तो सव्वेखमाघइत्ता॥
खमामिसव्वस्स अहियंपि इयखमियाइयारो अणुत्तर
वसमाहिमारुढो पफाडंतोविहरइ बहुजनवहेकयकम्म
नंबद्धमसंखिज्जाहि अमुहजनवज्जायसहस्सकोडीहि एगसमएण
विकुणाइं संघारंआरुहित्तय॥ इयतइविहारणेसे विग्घक
रावयणासमुढयनोसविज्जवणाए अणुसहिंवितिनिद्यवगा॥

तइ॰ तिमतातणापरिविचरनाधको॥ से॰ तेसाधुनइ॥ विग्घ॰ धर्मध्यननइविघननां
करणहारावइनापडइ॥ समु॰ प्रगटघाइजेजइ॥ तासे॰ जेवेहनइपनछइत
इतइ॥ विज्ज॰ उपसमावनइप्रछिइ॥ अणु॰ द्योयणारुपसाषइछतकेणा

ण मइ अदेषाइकषायकीधइ
छइतेदु॥ सव्व॰ सर्वनइत्रिवि
धि त्रिविधिषमावुछु॥१०४
सव्व॰ सर्वश्रमणाआदिदई
विधसंघनइ॥ जग॰ पूज्यनइ
अ॰ माहरइमस्तकइहाथजो
डीनइ॥ सव्व॰ सर्वअपराधइ
खमानइमुरुसंबधीनइपूज्य
नइखमावइछइ॥१०५ सव्व॰
पनरइकर्मभूमिमाहिसर्व
जीवरासस्समणसंघसमुदा
य॥ अथवासर्वजीवरासधा
वरजंगमरूप॥ जाव॰ जलड
जावइ॥ धम्मो॰ धर्मनइविष
इ॥ निय॰ पोतानइचित्तघाण
नइ॥ सव्व॰ दुखमानइ॥ खमा
पूज्यनइखमावइछइ॥१६
य॰ पूर्वोक्तप्रकारइ॥ खामि॰
षमाव्या १४ टाल्या अड
सठावारइपणआसातना

माहि॥ साहू॰ पहवाछका
आयणापइजइमाहिसाधइ
११॥ हिव उपकरुर्गोपसर्गरु
पआपदाआव्याइसरखाया
रहितपसंघारोपारिपडुचा
उइ॥ किंपुः तोकिसुतहूसरा
षागुणवंतअणगारनइ॥ सा
हा॰ सरखाइयानीआमणा हा
रगुणयुरुसहित॥ धीर॰ बु
द्धिवंतइ॥ संग॰ उपसर्गनइअ
नावइसिहोतनइजाणीइनि
मकयुरुनइसंयोगिआत्मरो
धनरहितमनहुइजेहनु
तसंगतमनतेणइसंगतमन
इ॥ नहुः संघारउपारिपडुचा
इइ॥ किनपडुचाइइ॥११॥
इहुं॰ छाडीममतानइअनो
वइत्तसरा॰ सरीररूपीइघरा
किसुजाणीनइ॥ अनो॰ चि
तनारूपअत्रअसुत्रफल

निहं॰ उपरिनारहणहारगीताघेपुरु॥ के॰ णइपकारितेसाधुसाधवी
इतकहइछइ॥ जइ॰ जेउपरिछइ॥ तेमु॰ तेमुनिवरसुकोसलादिक॥ आ
रो॰ रद्या॥ विज्ञ॰ आराधनारूपसेलडनानइपूर्वकविस्तरइ॥ अपरि॰
शरीरनाविनृषारहितममतानइअनावइ॥ गरि॰ पर्वते॥ पद्मा॰ वाकवल
मनमताबर्जित॥ विलतिन्हं अणसणकरीरद्या॥ तेपर्वतकेहवोछइ॥ बहु॰
घलेव्याघ्रीस्त्वापडकरा॥ सक॰ व्याघ्रसहित॥ गाम॰ बाहामणु॥ सुरप

नइतावतेमुणिवरा आरोविय विछरा अपरिकम्मा गिरिप
झारविलगा बहुसावयसकुलंमि धीधणियबद्धक
छा अणुत्तरविहारणेसमम्मयखाया सावयदाढगया विहु
साहितउत्तमंअठं किंपुणअणगारसहायगिहिधा
रिहिंसंगयमणोहि नहुनिज्जरिश्रइमो संघारोउत्तमंअठं
उहुठसरारघरा अन्नोजावोसरारं अन्नंतिधम्मस्सकारणा
मुविहियासरारंपिछडंति॥ नवजोगताजावअनेरुतेघीअ
नेरुअवेतनारूपशरीररूपीइमवीतवइमाशरीरप्रतबधकुरुनारकए
हकल्पवहुशरीरा॥ धम्म॰ धर्मआराधवानिमित्तइ॥ सुवि॰ सधु॥ एशरीर
अनादिनुरोलवाहारतघापुत्रकलत्ररहितहनइ॥ छंडे॥ तमनपरहरइ॥

णा टिति होइजसंघारइर
दा॥ किहासुकरतुजयाते
केहइछइ॥ धीध॰ तेणइसा
धइएकाकीपणइसखाइया
रहितपणाइपणिधीर्यरूप
विज्ञनइचक्षिरूपआकु
रुछइ॥ बी॰ बीधइ॥ क॰ आ
राधनारूपपतिज्ञातेरूपका
बइगबीधइ॥ अणु॰ अणु
त्तरसंयममोक्षसाधवानइ
उपायतेणाइविहारइविच
रइ॥ सम॰ पूर्वमुनिवरसम्य
गप्रकारइ॥ आत्मात्युकिछु
एघमार्हीसावय॰ सायदावा
घासिंहादितहनाहाठानइ
विघइपडुतारद्याघकापणि
सायदइजघवानइकाजइदा
ठइयाजतघकाएकलानि
आमणारहितपणाइधर्मध्या
नध्यानचुवासाहसीकपणा

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

रूपचंद्रतावल्लीलीधीते
रंदा॥ चंद्र॰ निर्मलसीतला
॥ सह॰ सुखमुक्तिरूप
ध्या पुन्यनासमुदायरू
संक॰ सारमाहिधीका
नइमुक्तिनास्थानक॥
था॰ सदाइ॥ दिन॰ मरुसे
कनइश्रमरपदरूपधा
तिरानछत्र॥१२३॥
सप्तारूपः नावाला
बोधसप्तः

वरग॰ राधसवेधनइ साधवुपामुं॥ केवल॰ केवलज्ञानसहितजेह
तनेहनुआइषइ॥ परि॰ समापूपूरुंथयु॥ उत्तम॰ परमसुकलतेश्या।
अनुगतसहिता॥ पडिव॰ पडिवज्युंउत्तमार्घमोक्ष॥१२॥ इवइसास्व

वरगविशेलहुं केवलसरि संमानपरिहीणोइत्तम
लसाणगउ पडिवन्नोउत्तमंअर्हं॥१२१॥ एवंमए अभि
थूया संघारगइंदरवंधनारुठा सुसमणानरिंदवंदा सु
हसंकमणंसयादिंतु॥१२२॥ इतिसंघारापइन्नसमा
परउपगारासाधुरत्नेन संक्षेपतोअर्हद्गर्गेनकृतउत्तव
स्तवनइहितनइअर्घइ॥ऋषिकृपालो॥ संवत१६५९वर्षेमागसवद
१॥ जोमेलषउत्तऋषिश्रीमांडणवडोदरामध्येस्थानात्

कारकसंघार॥
हारनागुणास्तवइछ॰
एवं॰ एणइपूर्वोक्तप्रकार
ज्ञा॥ मए॰ साक्षात्कारकक
हइछइ॥ मए॰ मइयुक्तानइ
कहवइकरीस्तवा॥ केह
वाछइते॥ संघा॰ संघार
रूपगजेंद्रनइस्वधइबइ
ठा॥ सुस॰ सुश्रमणाप्रधा
नउत्तमलुतयस्त्रीपणु॥ नरि॰
नरनाइंद्रतेसंघाररूप
गजेंद्रतेहनइस्वेधबइसा
राधसवेधसाधीनइआरा

MEMORIAL
DR BHAU DAJI